मैं तो पानी हूँ जी

सुभाष चन्द्र मिश्र

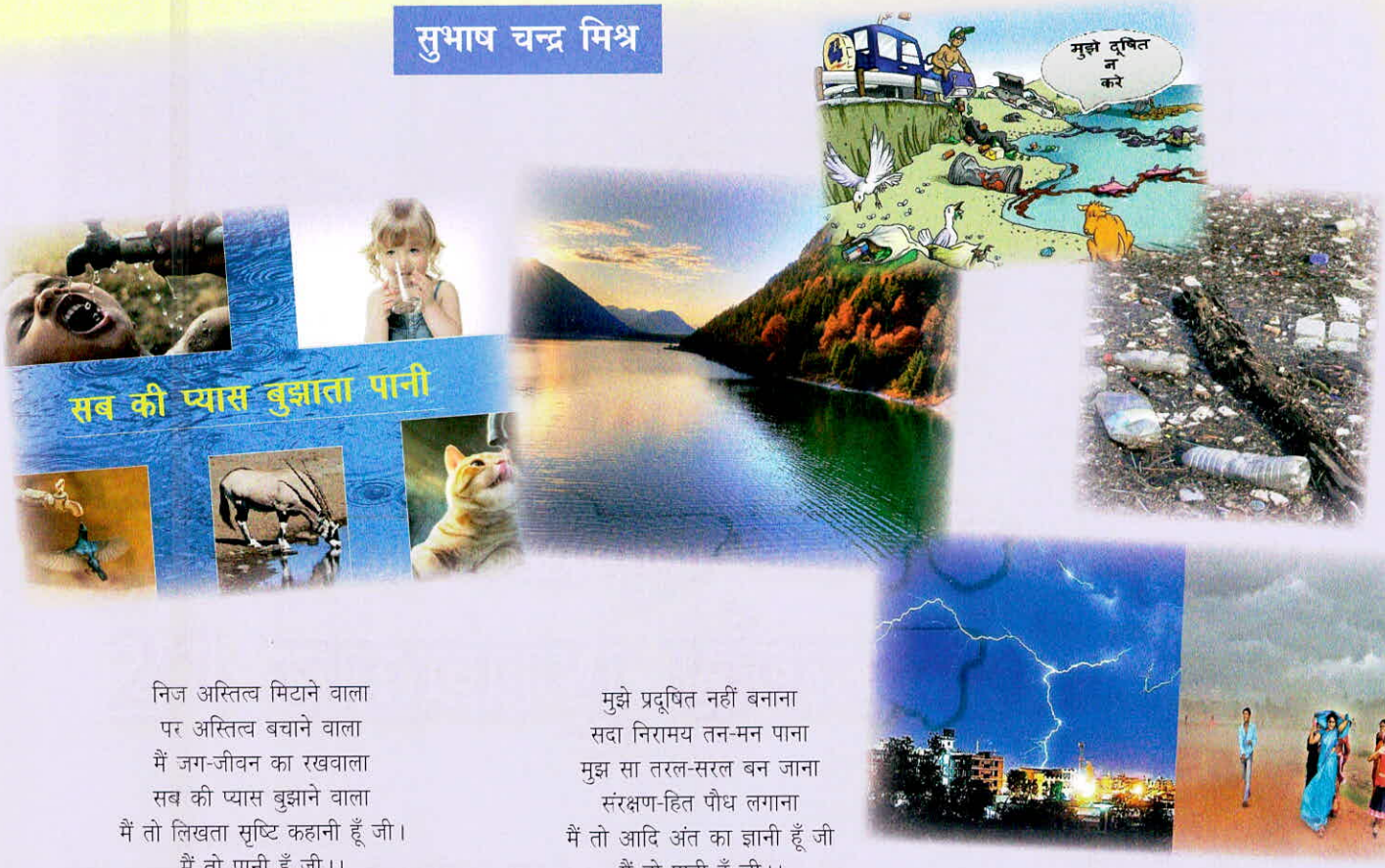

निज अस्तित्व मिटाने वाला
पर अस्तित्व बचाने वाला
मैं जग-जीवन का रखवाला
सब की प्यास बुझाने वाला
मैं तो लिखता सृष्टि कहानी हूँ जी।
मैं तो पानी हूँ जी।।

दुनिया मुझको जीवन कहती
मेरी नदियाँ हर क्षण बहती
बदरी मुझको धारण करती
मुझसे ताल-तलैया भरती
मैं तो निश्छल बलिदानी हूँ जी।
मैं तो पानी हूँ जी।।

मैंने सबमें मिलना जाना
मिलकर गंगा जल बन जाना
अरे हंस! फिर क्यों विलगाना
दूध-दूध है तुझको पाना
मैं तो समरसता का सानी हूँ जी।
मैं तो पानी हूँ जी।।

मुझे प्रदूषित नहीं बनाना
सदा निरामय तन-मन पाना
मुझ सा तरल-सरल बन जाना
संरक्षण-हित पौध लगाना
मैं तो आदि अंत का ज्ञानी हूँ जी
मैं तो पानी हूँ जी।।

मैं ही थल में, मैं ही नभ में
मैं ही पवन और पोखर में
मैं ही सरिता और सागर में
मैं ही कूप और गागर में
मैं तो प्राण-तत्व का दानी हूँ जी।
मैं तो पानी हूँ जी।।

जन्म-मरण का साथ हमारा
मुझसे हरा-भरा जग सारा
मुझ बिन रेगिस्तान सहारा
मुझ बिनु जगती हृदय-विदारा
मैं तो प्रलय कहानी हूँ जी।
मैं तो पानी हूँ जी।।

क्या? है, "आँखों में पानी" तेरे
या "निरा मूढ़ता" तुझको घेरे
लगा टकटकी बादल हेरे
फिर भी स्रोत मिटाता मेरे
मैं तो बूँद-बूँद-वरदानी हूँ जी।
मैं तो पानी हूँ जी।।

"बिनु पानी सब सून" जान लो
चमक-दमक सब गयी मान लो
"चुल्लू भर पानी" गर पा लो
"पानी सिर से ऊपर" ना लो
मैं तो त्राहि-त्राहि को बानी हूँ जी।
मैं तो पानी हूँ जी।।

संपर्क करें:
सुभाष चन्द्र मिश्र "सुभाष" (भाषा शिक्षक)
A/278 आवास विकास, किच्छा-263148, जनपद-ऊधमसिंह नगर, उत्तराखंड; दूरभाषः 9411792738